ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 2, Issue 05, May 2012 Impact Factor 2.809 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

राजनीतिक सद्धांत के निर्माण में कार्ल मार्क्स के योगदान का अध्ययन

प्रा. कु. एस. आर. शवणकर
राज्यशास्त्र वभाग प्रमुख
कला वा णज्य महिला महा वद्यालय, बल्लारपूर

प्रस्तावना:

कार्ल मार्क्स का जन्म **5** मई, **1818** को जर्मन शहर ट्रे वस में एक यहूदी परिवार में हुआ था। कम उम्र से, कार्ल मार्क्स को एक असाधारण प्रतिभा के रूप में माना जाता था। उन्होंने बड़े पैमाने पर अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन का अध्ययन कया। **1835** में बॉन वश्व वद्यालय से स्नातक होने के बाद, वह आगे की पढ़ाई के लए ब र्लन चले गए। वहाँ, हेगेल के दर्शन ने उन्हें बहुत प्रभा वत कया। उन्होंने इतिहास और दर्शन का अध्ययन कया, और तेईस वर्ष की आयु में, उन्होंने अपने शोध कार्य के लए जेना वश्व वद्यालय से डॉक्टरेट की उपा ध प्राप्त की।

वास्तव में, मार्क्स की शक्षण में वशेष रु च थी। ले कन उनकी उग्र और क्रांतिकारी सोच के कारण, उन्हें कसी भी वश्व वद्यालय में प्रोफेसर के रूप में नौकरी नहीं मली। इस लए उन्होंने समाचार पत्र रेंस ज़ोटिग के संपादक के रूप में नौकरी ली। अखबार पर और प्रतिबंध लगा दिया गया था। इस लए वह पेरिस चला गया। वहां उनकी मुलाकात प्र सद्ध अर्थशास्त्री फ्रेडरिक एंगेल्स से हुई। उनकी दोस्ती बहुत मजबूत थी। यह एन्जिल्स की मदद से था, जो उन्होंने अपनी पुस्तक 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' को पूरा कया और प्रका शत कया। वह तब इंग्लैंड में बस गए। **1864** में, उन्होंने लंदन में अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट संगठन की स्थापना की। **1867** में, उन्होंने महत्वपूर्ण पुस्तक 'दास क पटल' लखी और स क्रय राजनीति में भी प्रवेश कया। इसके अलावा, उन्होंने निम्न ल खत पुस्तकें लखी हैं।

(1) Holy Family (1845) (2) The Philosophy of Poverty (1847) (3) The Critique of Political Economy (1859) (4) Value, Price & Profit (1869) (5) The Civil War in France (1870) (6) Class Struggle in France (1850) (7) The German Ideology (1846) & Elven Theses on Feuerbach (1845).

हेगेल ने मार्क्स के लेखन को बहुत प्रभा वत कया है। इंग्लैंड की द्वंद्वात्मकता से आक र्षत होकर, उन्होंने अपनी स्वयं की द्वंद्वात्मक मत्रता का परिचय दिया, वास्तव में मार्क्स ने हीगेल की द्वंद्वात्मकता को सबसे आगे रखा। काबेर के साम्यवाद से आक र्षत होकर, उन्होंने अपने स्वयं के साम्यवाद की घोषणा की। रिकार्डो के वचारों का अ धक अध्ययन करके, उन्होंने अपना मूल्य सद्धांत स्था पत कया। स्वर्गदूतों की मदद से, उन्होंने समाजवाद को क्रम में लाया। मार्क्स ने काल्पनिक समाजवाद को एक व्यावहारिक रूप दिया, दुनिया को एक नया दर्शन प्रस्तुत कया और एक नई दिशा दिखाई। **14** मार्च, **1883** को मार्क्स की लंदन में मृत्यु हो गई। कार्ल मार्क्स का राजनीतिक सद्धांत और समाजशास्त्री सद्धांत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। मार्क्सने व भन्न वषयोपर अपने वचार प्रस्तुत कए है। इस शोधपत्र का उद्देश राजनीतिक सद्धांत के निर्माण में कार्ल मार्क्स के योगदान का अध्ययन करना है।

अनुसंधान निबंध के लए प्रयुक्त अनुसंधान व ध:

वर्तमान शोध प्रबंध के लए उपयोग की जाने वाली जानकारी और तथ्यों को वषय से संबं धत व भन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, लेखों, समाचार पत्रों से संक लत कया गया है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1) राजनीतिक सद्धांत के निर्माण में कार्ल मार्क्स के योगदान का अध्ययन।
2) कार्ल मार्क्स द्वारा नि र्मत राजनीतिक सद्धांतो का अध्ययन करना।
3) कार्ल मार्क्स राजकीय वचारोको जानना।
4) शोध के निष्कर्षों के आधार पर राजनीतिक सद्धांत के वकास हेतु सुझाव देना।

अनुसंधान की आवश्यकता और महत्व:

कई वैज्ञानिकों ने मार्क्स के राजनीतिक सद्धांतो की व भन्न तरीकेसे आलोचना की है, यह निष्कर्ष निकालना गलत है क मार्क्स के राजनीतिक सद्धांत पूरी तरह से गलत और असत्य है, इस बातको पॉपर ने समझाया है । सी. एल. वेबर के अनुसार, मार्क्स के सद्धांत के अनुसार, श्र मकों के लए दिन-रात काम करने के बावजूद, अपना पेट भरने के लए पर्याप्त कमाई करना मुश्किल है, जब क पूंजीपति बिना कसी शारीरिक श्रम के वला सता में लुढकते हुए दिखाई देते हैं। हालां क मार्क्स के अ धशेष मूल्य का सद्धांत वैज्ञानिक रूप से गलत है, इसमें कई तथ्य शा मल हैं। एन्जिल्स का स्पष्ट मत है क श्र मकों को उनके श्रम का उ चत मूल्यांकन देने के लए समाजवाद ही एकमात्र तरीका है। इस सद्धांत ने, पूंजीपतियों के श्रम शोषणकारी रवैये का खुलकर प्रदर्शन करके यह साबित कर दिया क पूँजीवाद के वनाश की जड़ें पूँजीपतियों के रवैये में अंतर्निहित हैं। मार्क्स के सद्धांत ने मजदूर को उसके न्याय की मांग के लए जगाया और उसने श्र मक संघों का गठन कया। आप कह सकते हैं क पूंजीवादी, समाजवादी और साम्यवादी राष्ट्रों ने भी श्र मकों के कल्याण के लए कई कानून पारित कए और पूंजीवादी रवैये को नियंत्रित कया है। ले कन यह पूरी तरह संभव नहीं हो सका है। इस लए राजनीतिक सद्धांत के कार्ल मार्क्स के योगदान को जानने के उद्देशसे शोध का वषय महत्वपूर्ण है।

राजनीतिक सद्धांत के निर्माण में कार्ल मार्क्स का योगदान:

मार्क्स से पहले कई वचारकों ने राज्य की भू मका को समझाया है। अरस्तू के अनुसार, राज्य एक व्यक्ति को खुश और संतुष्ट करने के लए बनाया गया था। व्यक्तिवादियों ने संस्थान को राज्य में कई दोषों के बावजूद एक आवश्यक चीज के रूप में स्वीकार कया है। परंपरावादियों ने तर्क दिया है क राज्य के बिना मानव वकास संभव नहीं है। राज्य सं वदात्मक वचारक के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा के लए आवश्यक मानता है। लॉसकी के अनुसार, राज्य व भन्न संस्थानों के बीच सामंजस्य बनाने के लए आवश्यक है। ले कन राज्य पर मार्क्स के वचार ऊपर से अलग हैं। मार्क्स का कहना है क प्राचीन समय में राजशाही नहीं थी। सभी लोग स्वतंत्र रूप से अपना काम कर रहे थे। उस समय कोई वर्ग और कोई वर्ग संघर्ष नहीं था।

ले कन समय के साथ, कुछ व्यक्तियों ने उत्पादन के साधनों का स्वा मत्व ले लया, और समाज दो वर्गों में वक सत हो गया, मजदूर वर्ग, अमीर और गरीब। मु ी भर धनी लोग, जो आ र्थक रूप से मजबूत थे, ने समाज के नैतिकता, सद्धांत, आचरण और वचारों का फैसला कया और दूसरों को केवल वत्तीय सहायता के बल पर उन सद्धांतों का पालन करने के लए मजबूर कया। कानून, स्वतंत्रता, न्याय, शक्षा, आदि के सभी वचार अमीर और गरीबों के लए घातक बने रहे। यह अमीर था जिसने अपनी ताकत को मजबूत करने के लए सेना, जेलों और कानून बनाया और गरीबों को उनका पालन करने के लए मजबूर कया।

इस तरह, अ भजात वर्ग ने अपने संसाधनों की रक्षा करने के लए, निम्न वर्ग का शोषण करने और अपने वरो धयों का सफाया करने के लए राज्य बनाया, जैसा क कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक द कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो में कहा है। मार्क्स के अनुसार, राज्य सत्ता में व्यक्ति की इच्छा को व्यक्त करने का एक साधन है। "राज्य कुछ भी नहीं है, ले कन समाज में प्रमुख वर्ग का एक उपकरण है" राज्य को शासकों के अ धकारों, उनकी पसंद, उनकी स्वतंत्रता, संपत्ति, आदि की सुरक्षा के लए बनाया गया था। अतः मार्क्स राज्य को एक अस्थायी संस्था मानते हैं। केवल अमीर लोग इस राज्य संस्था का उपयोग करते हैं और आनंद लेते हैं। अतः राज्य कोई कल्याणकारी संस्था नहीं है। मार्क्स का कहना है क राज्य शक्तिशाली अ भजात वर्ग द्वारा श्र मकों का शोषण करने के लए बनाया गया तंत्र है।

"राज्य एक ऐसा तंत्र है जिसके माध्यम से शासक वर्ग भ वष्य के बाकी हिस्सों पर अपनी इच्छाशक्ति में सुधार करता है। राज्य केवल श्रम का शोषण और दमन करने में पूंजीवादी की मदद करने के लए मौजूद है।" मार्क्स के अनुसार, राज्य शोषणकारी वर्ग का आधार है। यह दासता की अव ध के दौरान स्वामी, पूंजीपतियों, पूंजीपतियों की रक्षा के लए बनाया गया एक स्वार्थी संगठन है। इस राजनीतिक शक्ति का उपयोग सत्ता में लोगों द्वारा अपनी शक्ति को मजबूत करने और कार्यकर्ताओं को दबाने के लए कया जाता है। इस लए राज्य वर्ग संघर्ष की अ भव्यक्ति है। राज्यों की प्रकृति वर्ग वरोधीता पर निर्भर करती है। राज्य श्र मकों पर अत्याचार करने का एक उपकरण है। चूँ क मज़दूर वर्ग सदैव निरंकुश होता है, इस लए राज्य का संचालन करने और मज़दूरों के कल्याण के लए राज्य चलाने की शक्ति होना उनके लए स्वाभा वक है। ले कन पूंजीवादी वर्ग इस तरह के बदलाव के लए कभी तैयार नहीं होगा, और ऐसा कए बिना, श्र मकों को क्रांति के माध्यम से एकजुट करना और पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना और सत्ता हा सल करना वांछनीय है।

पूँजीवाद के पास अपने वनाश के बीज हैं। मु ी भर पूँजीपतियों, यानी वं चत पूँजीपतियों को क्रान्ति के ज़रिए मज़दूर वर्ग को उखाड़ फेंकना होगा। इसी लए कार्यकर्ताओं को अपनी संगठनात्मक ताकत बढ़ानी चाहिए। पूंजीवादी राज्य व्यवस्था को नष्ट करना समय की जरूरत है। जब अति-पूंजीवादी राज्य व्यवस्था नष्ट हो जाती है, तो समृद्ध वर्ग राज्य से नष्ट हो जाएगा। गरीबों के साथ होने वाले अन्याय, शोषण और अत्याचार को इससे मटा दिया जाएगा और कसी का भी शोषण नहीं कया जाएगा और राज्य में कसी का भी शोषण नहीं कया जाएगा। पूरी संपत्ति सामूहिक रूप से समुदाय के स्वा मत्व में होगी। प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार काम करेगा और जीवनयापन करेगा। इससे राज्य में वर्गहीन समाज का निर्माण होगा।

श्र मक वर्ग तानाशाही या एका धकार शक्ति की स्थापना के साथ, राज्य में कोई अमीर या गरीब नहीं होगा। उनके बीच कोई वर्ग संघर्ष नहीं होगा। आ र्थक असमानता मौजूद नहीं होगी क्यों क हर कोई इस सद्धांत को जानता है क श्रम के बिना कोई धन नहीं है। आ र्थक असमानता के कारण होने वाला अपराध, अन्याय, अत्याचार, अशांति अब मट जाएगी। इस लए, शासक और शा सत के बीच कोई अंतर नहीं होगा।

यानी एक नया वर्ग वहीन और मूर्ति वहीन समाज बनाया जाएगा। यह मानव जीवन में खुशी की अंतिम स्थिति है, ऐसे मार्क्स कहते हैं।

मार्क्स के सद्धांतों को भी चुनौती दी गई है। जिसमे एक राज्य संस्था पूंजीपतियों द्वारा अपने हितों के लए बनाई गई संस्था है। यह वचार क राज्य श्र मकों का उत्पीड़न करने का एक उपकरण है, उन्होंने कल्याणकारी राज्य की निंदा की वह निश्चित रूप से गलत है। क्यों क राज्य मानव जीवन को खुश और संतुष्ट करने के लए अस्तित्व में आया था, और मानव जीवन तब तक अस्तित्व में रहेगा जब तक वह खुश और संतुष्ट नहीं होता, उसने अरस्तू के राज्य के वचार का उपहास कया और खुद को हँसाया ऐसा कुछ वदवानों का मत है। मार्क्स, जो शोषण के खलाफ अपनी आवाज उठाता है, जोर देकर कहता है क मजदूरों को क्रांति के माध्यम से पूंजीवाद को नष्ट करना चाहिए और एक वर्गहीन और राज्य वहीन समाज बनाना चाहिए। वास्तव में, पूंजीपतियों के खलाफ श्र मकों द्वारा की गई क्रांति शोषण का एक रूप है। इस लए अमीरों के साथ अन्याय हो रहा है, ले कन यह अन्याय मार्क्स को अमान्य करता है। जब क कई शासक अपने न्याय और लोक कल्याण के लए प्र सद्ध हैं, मार्क्स ने राज्य के बारे में एक सामान्य कथन दिया क राज्य एक वर्ग से दूसरे वर्ग के शोषण का साधन है। कहने का तात्पर्य यह है क उसने जानबूझकर सच्चाई से मुंह मोड़ लया है। मार्क्स का यह वचार क "एक वर्गहीन और मूर्खतापूर्ण समाज स्वर्गीय आनंद है" खोखला है। ऐसा इस लए है क्यों क रूस और चीन में, एक श्र मक तानाशाही की स्थापना के बावजूद, शासक वर्ग और राज्य अभी भी हैं, और राज्य का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है ऐसा कुछ वदवानों का वचार है।

मार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद मार्क्स के दर्शन की आधार शला है। मार्क्स ने हीगेल से द्वंद्वात्मकता का वचार लया। मार्क्स ने हेगेल की द्वंद्वात्मकता को यह कहकर अमलीजामा पहनाया है क यह भावना की भावना से नहीं हुआ था। "पदार्थ मन का उत्पाद नहीं है, ले कन मन केवल पदार्थ का उच्चतम उत्पाद है" ऐसा मार्क्स का वचार है। "यह पुरुषों की उनकी चेतना नहीं है जो उनके अस्तित्व को निर्धारित करता है, बल्कि इसके वपरीत, उनके सामाजिक प्राणी उनकी चेतना का निर्धारण करते हैं।" ऐसा मार्क्स का वचार है।

मार्क्स ने इस द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का उपयोग यह दिखाने के लए कया क ऐतिहा सक और सामाजिक वकास कैसे हुआ। मार्क्स ने स्पष्ट कया क कसी समाज के वकास का आधार आ र्थक होता है, उत्पादन के साधन गतिशील और परिवर्तनशील होते हैं, और यह क उत्पादन के साधनों में परिवर्तन से समाज का जीवन प्रभा वत होता है। यही है, माल के उत्पादन के तरीके मानव समाज के कार्यों को निर्धारित करते हैं। उत्पादन के ये साधन, उत्पादन के तरीके और वनिमय प्रणाली समाज में मनुष्य के संबंधों को निर्धारित करते हैं। अगर यह बदलता है, तो मानव संबंध क्या है। इतिहास मानव के प्रयास का परिणाम नहीं है। उत्पादन और उत्पादकता के अनुसार इतिहास होता है। उनके अनुसार समाज का इतिहास निम्न ल खत चरणों से गुजरा है।

(१) आदिम साम्यवाद: - इस राज्य में मनुष्य एक प थक था। उसका एकमात्र पेशा जानवरों का शकार करना और जी वका चलाना था। उस समय, निजी संपत्ति, वर्ग वभाजन, वर्ग संघर्ष आदि, मनुष्य के लए एक झटका था। यह मार्क्सवाद के अनुसार, प्राचीन साम्यवाद का समय था।

(२) गुलामी का काल: - जनसंख्या में वृ द्ध के कारण, मानव की आवश्यकताएं बढ़ीं और आजी वका के नए साधन भी आवश्यक हुए। कुछ लोग अपने खेतों को बनाकर अमीर बन गए। अन्य लोग उनकी शरण में रहने लगे। उन्हें भूदास कहा जाता है। ऐसे दास अपने स्वामी के लए काम करने लगे, और उनके स्वामी उन्हें

खलाने के लए पर्याप्त देने लगे। परिणामस्वरूप, प्राचीन समाज को स्वामी और दासों में वभाजित कया गया था।

(३) सामंतवाद: - सामंतवाद गुलामी के बाद बनाया गया था। स्वामी के संघर्ष से राजतंत्र का निर्माण हुआ। ऐसे शक्तिशाली राजा, राजा ने राज्य की स्थापना की। कुछ लोगों ने उसकी मदद भी की। बदले में, राजा ने उन्हें भू म दी। उन भू म मा लकों को जमींदार या सामंती स्वामी कहा जाता है। दासों ने अपने खेतों पर काम करना शुरू कर दिया और सामंती प्रभुओं द्वारा उनका शोषण कया गया। इसने दासता और सामंती प्रभुओं और दासों के बीच संघर्ष के कारण असंतोष पैदा कया।

(४) पूंजीवाद: - व्यापारी वर्ग ने मजदूर वर्ग को भड़काया। वज्ञान की उन्नति के साथ, व्यापारी वर्ग ने उत्पादन के साधनों पर स्वा मत्व स्था पत करके पूंजीवाद का निर्माण कया। व्यवसाय केंद्रीकृत हो गए और छोटे व्यवसाय लगभग गायब हो गए। मजदूर अपनी आजी वका के लए पूँजीपति वर्ग पर निर्भर होने लगे। पूंजीपतियों ने उससे अ धक काम लेना शुरू कर दिया और उन्हें न्यूनतम मजदूरी का भुगतान कया। पूंजीपतियों द्वारा श्र मकों का शोषण कया गया और उनके बीच फर से झगड़े शुरू हो गए।

(५) समाजवाद: - समाजवाद पूंजीवाद को खत्म करने के लए, सार्वजनिक स्वा मत्व में उत्पादन और धन के साधनों को बनाए रखने के लए बनाया गया था; और मजदूरों का एका धकार बनाया।

(६) साम्यवाद: - श्र मकों का एका धकार साम्यवाद में बदल गया था। इस तरह के साम्यवाद में वर्ग संघर्ष, वर्ग वभाजन, धर्म और राज्य नहीं है। इस साम्यवाद में सभी को उसकी योग्यता के अनुसार काम और कीमत मलेगी। प्रत्येक को उसकी जरूरत और क्षमता के अनुसार और सभी को काम करके अपना भोजन प्राप्त करना होता है।

इस प्रकार आज तक का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। मार्क्स का कहना है क समाज का वकास कैसे हुआ और साम्यवाद वर्ग संघर्ष का अंतिम ले कन सर्वोच्च राज्य है। मार्क्स के अनुसार, इतिहास का आधार भौतिकवाद है। इसका एक हिस्सा वर्ग संघर्ष है और यह वर्ग संघर्ष के माध्यम से है जो समाज को प्रभा वत करता है। ले कन मार्क्स का दृष्टिकोण एकतरफा है। समाज संघर्ष के बजाय बातचीत के माध्यम से वक सत होता है। सहयोग वकास की नींव है, उन्होंने इस महत्वपूर्ण सद्धांत की अनदेखी की। ऐसा कुछ वदवानों का वचार है। मार्क्स का यह दावा क आ र्थक सद्धांतों के माध्यम से ही परिवर्तन संभव है अप्रासं गक है। आपसी द्वेष, धा र्मक वरोध आदि से भी इतिहास को आकार मला है। इतिहास अकेले इतिहास नहीं बनाता है, यह केवल उदाहरणों से साबित हो सकता है। जैसे राम-रावण और कौरव-पांडव के बीच युद्धों का कारण कोई अर्थ नहीं था। यह कहना है, मार्क्स ने इस तथ्य की अनदेखी की क इतिहास के अलावा अन्य कारक भी इतिहास का निर्माण करते हैं। मार्क्स के लए यह कहना गलत है क आ र्थक सत्ता के लोग राजनीतिक शासक बन जाते हैं। बु द्ध, साहस और छल के सहारे भी राजनीतिक सत्ता हा सल करने के कई उदाहरण हैं। जैसे पोप की शक्ति। मार्क्स का एक वर्ग वहीन समाज और एक वैचारिक समाज का वचार केवल काल्पनिक है। रूस और चीन में साम्यवाद के उद्भव के बावजूद, वर्ग और राज्य नष्ट नहीं हुए थे। इस प्रकार मार्क्स का ऐतिहा सक भौतिकवाद सी.एल. वेबर, प्लेमेटस, हंट, के अनुसार, राजनीतिक वैज्ञानिक, अपने वैज्ञानिक सद्धांत को स्वीकारय नहीं है क्यों क इसमें व्यापक और गहन वैज्ञानिक सोच का अभाव है। हालां क मार्क्स ने हेगेल के सद्धांत की नींव रखी, ले कन यह पूरी तरह से स्थिर नहीं रह सकता। ले कन यह उस सद्धांत के आधार पर है क मार्क्स ने ऐतिहा सक भौतिकवाद के नए वचारों को जन्म दिया है।

मार्क्स के पूर्व व लयम थॉम्पसन, जॉन ग्रे, थॉमस हाउसग्रीन, जॉन फ्रां सस, ब्रे इत्यादि जैसे राजनीतिक वैज्ञानिकों ने समाजवादी समाजवाद को माना। उन्होंने गरीबी के कारण के रूप में व्यक्तिगत धन का हवाला दिया। ले कन वैज्ञानिकों ने यह नहीं सोचा था क इस तरह की गरीबी को मटाने के लए एक क्रांति की आवश्यकता है, बल्कि यह क समाज में नियोक्ताओं और श्र मकों के बीच सहयोग की आवश्यकता थी। ले कन मार्क्स का साम्यवाद एक साजिश का हिस्सा था, और एक आंदोलन के रूप में इसे मुक्त कया गया था। आज के समाज में, इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। यही प्र क्रया समाज पर लागू होती है। समाज में हमेशा दो परस्पर वरोधी वर्ग होते हैं। जैसे अमीर-गरीब, नियोक्ता-मजदूर, कारखाना-मजदूर एक-दूसरे के लए प्यार और सहानुभूति नहीं रखते हैं। ऐसा इस लए है क्यों क हर वर्ग अपने हितों की रक्षा के लए लगातार प्रयास कर रहा है। उनके संघर्ष का मूल कारण व्यक्तियों के बीच आ थक असमानता है।

मार्क्स अपने अ धशेष मूल्य और वर्ग संघर्ष का सद्धांत मे बतलाते है की मानव संस्कृति की शुरुआत से लेकर आज तक, यह देखा गया है क समाज का एक वर्ग अमीर है और दूसरा गरीब है। संपन्न वर्ग अपने फायदे के लए गरीब वर्ग का लगातार शोषण कर रहा है। उत्पादक वर्ग की स्थिति जीवन के तरीके, सांस्कृतिक आदर्शों और मजदूरों से श्रेष्ठ ऐसे धनाढ्य वर्ग के स्वार्थ को बना देती है। यही वजह है क उनके बीच लगातार संघर्ष चल रहा है। यही कारण है क दुनिया का इतिहास आ थक और राजनीतिक शक्ति के लए वपक्ष के निरंतर संघर्ष का इतिहास है।

मार्क्स का कहना है क कसी भी अव ध का एक अध्ययन बताता है क हर देश में आ थक और राजनीतिक शक्ति के लए संघर्ष है। जैसे प्राचीन रोम में संरक्षक (प्रमुख), और दास थे। मध्यकाल में, सामंती प्रभु, स्वामी, गल्डमास्टर, व्यापारी और दास जैसे वर्ग थे। इस प्रकार समाज अमीर और गरीब वर्गों में वभाजित था। वे अपने हित के लए संघर्ष करते थे । ऐसे वर्ग संघर्ष आधुनिक समय में भी जारी है। आधुनिक औद्यो गक युग में संघर्षशील वर्ग, पूंजीपति और मजदूर उभरे। मजदूर वर्ग अपनी आजी वका के लए अपने श्रम को पूंजीपति को बेचता है। ले कन न तो पूँजीपति और न ही बु द्धजीवी कभी अपने श्रम के अनुपात में श्र मकों को उ चत वेतन देते हैं। ऐसा इस लए है क्यों क श्र मकों के पास संगठनात्मक ताकत नहीं है और यह जनशक्ति की असी मत आपूर्ति है। यह महसूस करते हुए क पूंजीपति श्रम शक्ति के समर्थन के कारण ही उत्पादन करते हैं, उन्हें श्र मकों को उ चत वेतन देना चाहिए। ले कन ऐसा कए बिना पूँजीपति मज़दूरों का शोषण करते हैं। मार्क्स स्पष्ट रूप से कहते हैं क पूँजीपति अपने स्वार्थ के लए सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं का उपयोग करते हैं और पूँजीपति सरकार को अ धक से अ धक मुनाफा कमाने के लए सरकार को नियंत्रित करके गरीबों का आ थक शोषण करते हैं।

वास्तव में, माल के उत्पादन के लए पूंजीपतियों और श्र मकों के बीच सहयोग आवश्यक है। पूँजीपति मज़दूरों और मज़दूरों के बिना पूँजीपतियों के बिना नहीं रह सकता। फर भी यह एक त्रासदी है क पूँजीपति मज़दूरों के शोषण का काम नहीं छोड़ते। इस प्रकार पूँजीपतियों और मज़दूरों के बीच वर्ग संघर्ष शुरू होता है और यह पूँजीवादी भावना में होता है क पूँजीवाद का वनाश शुरू हो। मार्क्स ने जोर देकर कहा क जल्द ही या बाद में कार्यकर्ता संघर्ष जीतेंगे और पूंजीवादी नष्ट हो जाएंगे।

मार्क्स के अनुसार, कसी भी वस्तु की कीमत उस वस्तु पर खर्च कए गए श्रम की मात्रा पर निर्भर करती है। जैसे यदि कसी पेड़ की शाखा को काटकर उसके जलने के लए उपयोग कया जाता है, तो उसका मूल्य घट जाता है। ले कन उस शाखा से लकड़ी की मेज या कुर्सी बनाने में अ धक खर्च होता है।

क्यों क उस पर बहुत काम कया गया है। मार्क्स ने उपयो गता और वनिमय मूल्य दोनों पर वचार कया। हवा और पानी की उपयो गता मूल्य अ धक है, ले कन कसी भी श्रम की आवश्यकता नहीं है। इस लए उनका कोई वनिमय मूल्य नहीं है। सारांश में, मूल्यांकन प्र क्रया में समय और श्रम महत्वपूर्ण हैं। कमो डटी मूल्य तदनुसार निर्धारित कया जाता है। मजदूरों के पास उत्पादन का साधन नहीं है। उनके पास केवल जनशक्ति है। निर्माता श्रम बल की मदद से माल का उत्पादन करता है और कीमत खुद तय करता है। इस प्रकार कार्ल मार्क्स ने राजनीति पर अपने भन्न-भन्न वचार रखे है जो आज भी प्रासं गक है। इस तरह राजनीतिक सद्धांत के निर्माण में कार्ल मार्क्स का महत्वपूर्ण योगदान है।

निष्कर्ष:

अध्ययन में पाया गया क, मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो' में पूँजीवाद के वनाश के कारणों को बताया है। मार्क्स का अ धशेष मूल्य का सद्धांत वस्तुओं के मूल्य का सद्धांत नहीं है। मार्क्स का यह कहना क कैसे पूंजीवाद श्रम का शोषण करता है, यह एक अतिरिक्त मूल्य सद्धांत है। मार्क्स ने अपनी पुस्तक दास कै पटल में इसका वश्लेषण कया है। मार्क्स का अ धशेष मूल्य का सद्धांत आ र्थक रूप से बहुत महत्वपूर्ण नहीं है। यह एक सद्धांत के रूप में उपयोगी है जो श्र मकों को पूंजीवाद के खलाफ क्रांति के लए प्रोत्साहित करता है। पूंजीवादी, समाजवादी और साम्यवादी राष्ट्रों ने भी श्र मकों के कल्याण के लए कई कानून पारित कए और पूंजीवादी रवैये को नियंत्रित कया है। ले कन यह पूरी तरह संभव नहीं हो सका है। इस लए राजनीतिक सद्धांत के निर्माण मे कार्ल मार्क्स का योगदान महत्वपूर्ण है। कार्ल मार्क्स के राजनीतिक वचार आज भी प्रासं गक है।

ग्रंथ सूची:

1) राजनीति वज्ञान का ऐच्छिक पाठ्यक्रम **(UGPS-01)** स्ट ड मटिरियल राजश्री टंडन मुक्त वश्व वद्यालय, उत्तर प्रदेश
2) एम. लक्ष्मीकांत, भारत की राजव्यवस्था - स वल सेवा एवं अन्य राज्य परीक्ष हेतु,संस्करण प्रथम
3) **Karl Marx , David Fernbach, et al., The First International and After: Political Writings: 3 (Marx's Political Writings), Verso; Reprint Edition (31 August 2010)**
4) **Shlomo Avineri, The Social and Political Thought of Karl Marx (Cambridge Studies in the History and Theory of Politics), Cambridge University Press; Revised ed. Version (2 September 1970)**
5) **Karl Marx, Das Kapital: A Critique of Political Economy, Lightning Source Inc (2 March 2011)**

समाचार पत्र: नवभारत, लोकमत, टाइम्स ऑफ इं डया

वेबसाइट:

- *https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%AF_%E0%A4%95%E0%A5%80_%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B8%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%*

A4%A6%E0%A5%80_%E0%A4%85%E0%A4%B5%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A3%E0%A4%BE

- *https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B2_%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B8*

- *https://omprakashkashyap.wordpress.com/2011/01/15/%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B8-%E0%A4%95%E0%A4%BE-%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%95-%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%BE/*